

अपने-अपने कारागृह

(उपन्यास)

सुधा झादेश

Apne-Apne Karagrih
By- Sudha Adesh

रचनाकार : सुधा आदेश ©
कृति का नाम : अपने-अपने कारागृह
संस्करण : प्रथम
वर्ष : 2015
मूल्य : ₹ 175/-
पृष्ठ संख्या : 118
प्रकाशक : मनसा पब्लिकेशन्स
मुद्रक : ट्रेडमैक्स प्रिंटेर्स, 132/1, मास्तिपुरम, आपोजिट
लेखराज खजाना, फैजाबाद रोड, लखनऊ-16
कम्प्यूटर डिजाइनिंग : दुर्गा प्रजापति
ISBN : 978-93-81377-80-2



प्रकाशक

मनसा पब्लिकेशन्स

2 / 256, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010

Email- manasapublications2007@rediffmail.com

www.manasapublications.org

समर्पण

समर्पित...
उन्हें जिन्होंने
अपने प्यार के
पहले कदम को
संभालने में जीवन के
खूबसूरत वर्ष बिताये ।

समर्पित...
उस खूबसूरत
एहसास को
जिसने अपने मृगछौने को
पलकों की छांव में
पलने-बढ़ने दिया...।

समर्पित...
उन जार-जार
बहते आँसुओं को
जो उनके कृतघ्न
भविष्य ने उन्हें
निरंतर दिये...।

समर्पित...

उस आस को
जो दो मीठे शब्दों की
आस में कुछ अबूझ स्वप्न
बुनते हुये जीवन के
अंतिम पलों से जूझ रहे हैं ।

समर्पित...

उन अंतिम पलों को
जिनमें यादें हैं
एहसास है
प्यार, अपनत्व नहीं
है सिर्फ अकेलापन...।

समर्पित...

उस अकेलेपन को
जो जूझ रहा है
बेचारगी, लाचारी से
पर हारा नहीं,
ढूँढ रहा है
जीवन में जीवन को...।

अपनी बात

‘हेल्पेज इंडिया’ के द्वारा करवाये सर्वेक्षण के अनुसार 70 प्रतिशत बुजुर्ग जो किसी कारणवश अपने पुत्रों के पास रहने को मजबूर हैं, उनके अत्याचार का शिकार हैं । इसमें 44 प्रतिशत पुत्र तथा 63.4 प्रतिशत पुत्रवधुयें बुर्जुगों से दुर्व्यवहार करती हैं...।’

इंसान की पूरी जिंदगी अपने कैरियर को मुकाम तक पहुँचाने के साथ बच्चों को पढ़ाने, लिखाने तथा उन्हें योग्य बनाने में निकल जाती है... उनके व्यवस्थित जीवन को देखकर जहाँ जीवन की सफलता एवं संतुष्टि का एहसास होता है वहीं मन का अकेलापन डराने लगता है । सच तो यह है तन-मन से संतुष्ट इंसान जीवन की सांघ्यावस्था में सुकून के पल चाहता है पर तभी न जाने क्यों आने वाले कल के अच्छे-बुरे ख्यालात मन को मथने लगते हैं... वस्तुतः जीवन की मध्यावस्था में इंसान तन, मन, धन से सक्षम होने के कारण जीवन के हर उतार चढ़ाव को सह लेता है पर जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है तन थकने लगता है तथा मन अनेकानेक दुश्चिंताओं और असमंजस में घिरने लगता है... इन दुश्चिंताओं का कारण उसके अपने अनुभव ही नहीं दूसरों के अनुभव भी होते हैं... शायद यही कारण है कि इंसानी जीवन की कटु सच्चाई का सर्वेक्षण मन को मथने लगा और सृजन हुआ उपन्यास अपने-अपने कारागृह का...।

जीवन एक सतत प्रक्रिया है... जीवनरूपी सरिता का उद्गम परमात्मारूपी महासागर से होता है, यह सरिता कंटरीले पथरीले मार्ग से होती हुई जनजीवन को समृद्ध करती हुई, अंततः परमात्मारूपी महासागर में स्वयं को विलीन कर अपने अभीष्ट की पूर्ति करती है । शून्य से प्रारंभ हुआ जीवन शून्य में मिलकर ही अपनी मंजिल पाता है । जीवन की पाँच अवस्थाएँ... बाल्यकाल, किशोरावस्था, यौवनावस्था, प्रौढ़ावस्था और फिर

वानप्रस्थ हमारे जीवनचक्र के विभिन्न रूप हैं... बसंत बाल्यावस्था, तपता तपाता ग्रीष्म किशोरावस्था, सावन गृहस्थ जीवन, शिशिर की कड़कड़ाती ठंड प्रौढ़ावस्था की जिम्मेदारियाँ, वहीं वानप्रस्थ पतझड़ सा इंसान को रूलाने को आतुर रहता है। दूसरे परिदृश्य में इंसान अगर अपनी जीवनावस्था को रात-दिन के दायरे में रखकर सोचे तब शायद स्वयं को अधिक परिभाषित कर पायेगा। बाल्यावस्था सुबह की पहली किरण, किशोरावस्था सुकून भरे जीवन का प्रारंभ, भरी दोपहरी संघर्षरत यौवनावस्था की यात्रा, सांझ प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था के भागमदौड़ वाले जीवन का निष्कर्ष तथा जीवन को निश्चितता के साथ जीने का समय... और रात्रि जीवन का शांतिपूर्ण अंत...।

जीवन की अन्य अवस्थाएँ तो इंसान किसी तरह काट लेता है पर बुढ़ापा देखकर उसे रोना आने लगता है... कुछ तो शारीरिक अक्षमता के कारण तथा कुछ अपने-अपने कार्यक्षेत्र से सेवानिवृत्ति के कारण...। सेवानिवृत्ति जीवन का अहम् हिस्सा है, पुरानी पीढ़ी को नई पीढ़ी के लिये जगह बनानी ही होगी... फिर अवसाद क्यों... जैसे इंसान जीवन की अन्य पारी खूबसूरती के साथ खेलता है वैसा ही इस पारी को क्यों नहीं खेल पाता...? जीवन की हर अवस्था की अलग-अलग दायित्व और जिम्मेदारियाँ हैं, इंसान ताउम्र उन्हें निभाने के लिये बाध्य भी है पर एक प्रश्न मन को सदा मथता रहा है जब हम जीवन की खूबसूरत पारी के पश्चात् बच्चों को अपने-अपने जीवन में व्यवस्थित कर, अपनी सारी जिम्मेदारियों से मुक्ति का एहसास कर सुकून महसूस करते हैं तो जीवन से भागने की बजाय खूबसूरती से जीना क्यों नहीं चाहते...?

वस्तुतः सेवानिवृत्ति के पश्चात् का जीवन सारी जिम्मेदारियों से मुक्त होकर कुछ संदर्भों को छोड़कर सिर्फ और सिर्फ स्वयं के लिये जीने का है... दूसरे शब्दों में बुढ़ापा टेस्ट मैच की वह खूबसूरत पारी है जिसमें धीरता है, गंभीरता है, अनुभवों का निचोड़ है, न कि एक दिवसीय या 20-20 मैच की पारी जिसमें जीवन की भागमभाग की तरह सिर्फ चौके, छक्के हैं पर खेल की वह खूबसूरती नहीं।

प्रत्येक इंसान को समझना होगा कि जीवन एक दुर्गम यात्रा है... इस यात्रा में जहाँ पग-पग पर अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है वहीं अनेकों लोग मिलते हैं, जुड़ते हैं फिर कभी सुख भरा तथा कभी दुख भरा एहसास देते हुये बिछड़ जाते हैं, उनसे कभी हम कुछ सीखते हैं, कभी कुछ सिखाते हैं...। सीखने सिखाने की परंपरा ताउम्र इंसान के साथ चलती रहती है... जीवन की यह यात्रा इंसान को अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त करने का समय देती है जो इस समय का भलीभांति उपयोग कर पाता है, सफलता उसकी अनुगामिनी बन जाती है... सफलता का खूबसूरत एहसास इंसान के जीवन की सांझ को भी खुशनुमा बना देता है।

जीवन और मन के अनेकों सकारात्मक पहलुओं के साथ कुछ नकारात्मक पहलू भी होते हैं ... जीवन की सांझ में नकारात्मक पहलू अधिक हावी होने लगते हैं... क्या होगा जब हमारा स्वास्थ्य हमारा साथ नहीं देगा... क्या होगा जब हमारी जीवन शैली बच्चों की जीवन शैली के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पायेगी... क्या होगा जब हम स्वयं को घर के उपेक्षित सामान की तरह उपेक्षित महसूस करेंगे ? अनेकों प्रश्नों के साथ हमें यह नहीं भूलना चाहिए परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हो, इंसान को उनका हल स्वयं ढूँढना पड़ता है।

सच तो यह है कि खुशनुमा सांझ पाने के लिये हमें अपने नकारात्मक विचारों, अपना अहंकार त्यागकर नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुये आगे बढ़ना होगा... अगर हमने सामंजस्य रूपी मंत्र को जीवन में उतार लिया तो न केवल हमारे लिये वरन् दूसरों के लिए भी जीवन सहज और सरल हो जायेगा पर इतना अवश्य याद रखें कि सामंजस्य स्थापित करने के प्रयास में अपना स्वाभिमान न खो जाये क्योंकि अगर स्वाभिमान खो गया तो इंसान जिंदा लाश बन जायेगा... वहीं नई पीढ़ी को भी सोचना होगा कि जिनके हम अंश हैं, उनके लिये शारीरिक और आर्थिक स्तर पर भले हम कुछ न करें पर उनका मान करें, सम्मान करें, न कि अवहेलना और तिरस्कार... जैसा करोगे वैसा ही पाओगे... उक्ति अक्षरशः सत्य है। मत भूलें जो इंसान इस संसार में आया है उसे जीवन की सभी अवस्थाओं से गुजरते हुये अंततः वृद्धावस्था का सामना करना ही पड़ेगा...।

माना बढ़ती उम्र के साथ शारीरिक क्षमताओं में कमी आ जाती है पर अगर मन में जोश और जुनून है तो इंसान हर उम्र में स्वयं को तरौताजा रख सकता है जिसने बुढ़ापे को बोझ समझ लिया, समझ लीजिये वह जीवन की आधी बाजी हार गया । मेरी यह कृति अगर जीवनाविमुख लोगों में जीवन का संचार कर पाई तो मैं समझूँगी कि मेरा लेखन सफल रहा । जीवन की खुशनुमा सांझ को सदैव खुशनुमा बनाये रखने के लिये इस जीवन में प्रवेश कर चुके मनीषियों तथा नवयुवाओं से मेरा यही आत्मनिवेदन है...।

वृद्धावस्था बोझ नहीं
खूबसूरत एहसास है,
निचोड़ है,
अनुभवों का...

ग्रहण कर सको
जितना...
ग्रहण कर लो
हे मानव...

संतुष्टि मिलेगी
जो न केवल निज को
वरन् जग को भी
सुकून देगी ।

सुधा आदेश

अपने-अपने कारागृह

‘ मेमसाहब फोन...!’

‘ दीदी कैसी हैं, आपका मोबाइल स्विच आफ आ रहा था इसलिये लैंड लाइन पर फोन किया... बताइये आप कब तक लखनऊ पहुँच रही हैं ?’

‘ हम ठीक हैं, शायद बैटरी डिस्चार्ज हो गई होगी... हम परसों दोपहर तक इंडियन एअरलाइंस की फ्लाइट से पहुँचेंगे ।’

‘ ओ.के. दीदी, मैं और शैलेष आपको और जीजाजी को लेने समय से पहुँच जायेंगे ।’

‘ व्यर्थ तकलीफ होगी, हम पहुँच जायेंगे ।’

‘ दीदी, इसमें तकलीफ कैसी... फाइनली आप आ रही हैं, हमें बेहद खुशी हो रही है... ममा तो बहुत एक्साइटेड हैं, अच्छा रखती हूँ रामदीन कुछ कह रहा है ।’

‘ फाइनली आप आ रही हैं... हमें बहुत खुशी हो रही है ।’ सुनकर उषा समझ नहीं पा रही थी कि नंदिता के वाक्य सहज थे या व्यंग्यात्मक... उसके दिल में दंश देते अनेकों तीरों में एक तीर की और वृद्धि हो गई थी... विचलित मनोदशा के कारण उसने रामू को निर्देश देते हुए कहा, ‘ अगर कोई अन्य कॉल आये तब कुछ भी बहाना बना देना, मैं अभी आराम करना चाहती हूँ...!’

आज सुबह से ही उषा बेहद उद्विग्न थी...नाशता भी नहीं किया था, अजय के आफिस जाते ही वह अपने कमरे में जाकर लेट गई... किसी से बात न करने की मनःस्थिति के कारण उसने अपना मोबाइल भी स्विच ऑफ कर दिया था... यहाँ तक कि नियत समय पर बाबची श्रीराम चाय बनाकर लाया तो उसने उसे भी लौटा दिया वरना आज से पूर्व उसे चाय लाने में जरा भी देर हो जाती थी तो वह सवाल जवाब करने से नहीं चूकती थी पर आज उसका न कुछ खाने-पीने का मन कर रहा था और न ही किसी से बात करने का...।

जिस परेशानी से वह पिछले कुछ दिनों से गुजर रही थी आज उसकी चरमावस्था थी... उसकी इस परेशानी को अजय समझ रहे थे पर उनका समझाना भी व्यर्थ हो गया था... कल उससे उसके महिला क्लब की सदस्या रीना, सीमा, ममता मिलने आई थीं, उसे अनमयरक देखकर सीमा ने उससे पूछा था, ‘ मेम, क्या तबियत ठीक नहीं है ?’